Notes Date / /

राग - भूपाली, थाट - कल्याण, स्वर - सारे शुद्ध, वर्जित - म, नि, जाति - औढ़व - औढ़व,
आरोह - स रे ग प ध सं।
अवरोह - सं ध प ग रे स।
पकड़ - ग रे स ध स रे ग, प ग, ध प, ग रे स।
वादी - ग संवादी - ध
गायन समय - रात्रि का प्रथम पहर।
विशेषता - चलन - इस राग का चलन तीनों सप्तकों में समान रूप में होता है परंतु विशेष तौर पर यह राग मन्द्र सप्तक और मध्य सप्तक के पूर्वांग में खिलता है।
प्राकृति और रस - इस की प्राकृति और रस शांत है। भक्ति और श्रृंगार रस की रचनाएं इसमें खूब सुनने के मिलती है
न्यास के स्वर - इस राग मे वैसे तो सभी स्वरों पर न्यास होता है। परंतु राग के स्वरूप का ध्यान रखते हुए ग को ध की तुलना में अधिक महत्व देना पड़ता है। क्योंकि इसमें ग वादी और ध संवादी जबकि इसके

Bhupali

सम्प्राकृतिक राग देशकार में ध वादी और ग संवादी है।

इस राग का चलन बिलकुल सीधा है और प्रारंभिक विद्यार्थियों को सिखाने के लिए बहुत उपयुक्त है।

Bhupali

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ग	-	ग	रे	ग	पप	ध	प	ग	गग	रे	स	ध	धध	स	रे
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा

अंतरा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								ग	गग	प	ध	सं	रेंरें	गं	रें
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सं	-	ध	प	ग	गग	रे	स								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1	सस	रे-	गग	प-	गग	रे-	गरे	स-								
2	गग	पप	धध	प-	गग	रेरे	गरे	स-								
3	गप	धध	पध	संसं	धप	गरे	गरे	स-	संसं	रेरे	ग-	सस	रेरे	ग-	सस	रेरे
4	सस	रेरे	ग-	पप	धध	सं-	धध	पप	ग-	रेरे	गरे	स-	धध	सस	रेरे	गरे
	ग-	ग-	ग-	धध	सस	रेरे	गरे	ग-	ग-	ग-	धध	सस	रेरे	गरे	ग-	ग-

Deshkar

राग - देशकार , थाट - बिलावल , स्वर - सारे शुद्ध , वर्जित स्वर - म , नि , जाति - औड़व - औड़व , वादी - ध , संवादी - ग , समय - दिन का प्रथम पहर (सुबह 7 से 10)

आरोह - स , ग रे ग प , धं धं सं ।

अवरोह - सं ध ध प , ध प ग , रे स ।

पकड़ - स ध ध प , ग प सं धं धं सं ।

परिचय — (1) उतरांगवादी राग - देशकार एक उतरांगवादी राग इसका वादी स्वर ध सप्तक के उतरांग में से लिया गया है और इसका संवादी स्वर सप्तक के पूर्वांग में आता है । समय की दृष्टि से भी अगर देखें तो इस राग का गायन - वादन समय

दिन का पहला पहर है जो कि दिन और रात के उत्तरार्ध अर्थात् 12 बजे रात से 12 बजे दिन के बीच आता है।

(2) रिषभ का स्थान- इस राग में रे स्वर का अल्पत्व रहता है। आरोह में अक्सर छोड़ भी दिया जाता है। जैसे - स पग पग प तथा, स ध ध प। अवरोह में भी इस पर रुका नहीं जाता जैसे- ध प ग रेस।

(3) कण स्वरों का प्रयोग — इस राग में स पग मग प इस प्रकार ग पर प का कण लगाया जाता है। इस प्रकार ध पर तार सं का कण लगाया जाता है जैसे - ग प संध संध सं।

(4) मुख्य स्वर संगतियाँ - स पग पग प, ग रे ग प संध संध प, स ध ध प, ग प संध संध सं, स ध ध प, प ध ग प ग रे स,

राग - देशकार

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16

स्थाई

सं	—	धध	पप	ग-	गरे	-रे	स-	स	धध	प	ध	—	धध	प	ध
दा	ऽ	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽरा	दाऽ	दा	दिर	दा	रा	ऽ	दिर	दा	रा

अंतरा -

स	—	धध	पप	ग-	गरे	-रे	स-	ग	पप	ध	ध	सं	संसं	गं	रें
दा	—	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽरा	दाऽ	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा

①

धध	स-	धध	प-	गग	प-	गरे	स-	सं-	गग	पप	धध	सं-	गग	पप	धध
② पप	धध	गग	प-	गग	रेरे	गरे	स-	ग-	पप	गरे	स-	गग	पप	धध	पध
③ गग	पप	धप	गरे	स-	गग	पप	धध	सं-	सं-	गग	पप	धध	सध	सं	सं-
④ पप	धध	सं-	गग	रेरे	स-	धध	पप								
स-	सं-	सं-	गग	पप	धध	सध	सं-								